# दीप आप हैं, आप स्वयं प्रकाशित हैं

दीपावली का त्योहार खुशियों की बहार लेकर आता है जो कार्तिक मास की अमावस्या के दिन मनाया जाता है। माना जाता है कि दीपावली के दिन अयोध्या के राजा श्री रामचन्द्र जो चौदह वर्ष के वनवास के बाद लौटे थे इसीलिए अयोध्यावासियों ने उनके स्वागत में घी के दीये जलाये थे, तभी से यह रोशनी का त्योहार मनाया जाता है।

**दीपावली मनाने के पीछे और भी कई कारण हैं, जैसे इस दिन श्रीकृष्ण ने नरकासुर का वध कर उसके चंगुल से 16 हज़ार युवतियों को मुक्त कराया था। इस कारण प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए लोगों ने दीप जलाये थे। इसी दिन समुद्र मंथन के पश्चात् 'लक्ष्मी' व 'धनवन्तरी' प्रकट हुये थे तथा अन्य देवताओं ने उनकी अर्चना की थी। आज भी इस दिन लोग सुख समृद्धि एवं ऐश्वर्य की कामना से लक्ष्मी पूजन करते हैं। यह भी माना जाता है कि इस दिन विष्णु जी नरसिंह अवतार धारण कर भक्त प्रहलाद की रक्षा करने आये थे। इस कारण लोगों ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए घी के दीये जलाये। हिन्दुओं के साथ-साथ सिक्खों के लिए भी दीपावली महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसी दिन अमृतसर में 'स्वर्णमंदिर' का शिलान्यास किया गया था। जैनियों के महावीर स्वामी का निर्वाण दिवस भी आज के दिन ही माना गया है, इसीलिए दीपावली को भारत के सभी लोग बड़े धूमधाम से मनाते हैं।**

- ब्र. कु. गंगाधर

## इसी शुभ दिन ईश्वरीय विश्व विद्यालय स्थापित

हम सबने जाना कि क्यों ये दीपावली का त्योहार इतना महत्वपूर्ण है, क्यों इसे सभी लोग बड़े उमंग-उल्लास के साथ मनाते हैं। परन्तु एक बात जो इस दिन को सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण बना देती है, वो यह है कि इस दीपावली के शुभ दिन को ही हम सभी के पिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए चुना।

दीपावली के दिन ही इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की नींव रखी गई। एक ऐसा ईश्वरीय विश्व विद्यालय जो ईश्वरीय ज्ञान द्वारा, आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा हमारी बुझी हुई आत्मा की ज्योति को फिर से प्रज्वलित करता है, और न केवल आत्मा के दीप प्रज्वलित करता है बल्कि उसे सबकी आत्मा की ज्योति को जगाने वाला बना देता है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना से परमात्मा हमें ये बताना चाहते हैं कि हे आत्माओं! तुम स्वयं ही प्रकाश हो, तुम्हें किसी स्थूल दीये को प्रकाशित कर प्रसन्न होने की आवश्यकता नहीं, बल्कि मेरी यही मनसा है कि तुम सभी मेरे जगमगाते चैतन्य दीपक सदा ही जगमगाते रहो और सदा ही प्रसन्नचित्त रहो। साथ ही परमात्मा शिव ये भी कहते हैं कि हे मेरे लाडले बच्चे! तुम कई जन्मों से अज्ञान अंधकार रूपी वनवास में जी रहे हो, तुम्हें रावण ने अपने कब्ज़े में ले रखा है, अब मैं तुम्हें इस रावण की कैद से छुड़ाता हूँ और ले चलता हूँ तुम्हें राम राज्य।

इस विश्व विद्यालय की स्थापना के साथ ही परमपिता शिव हमें उस विकारी, पतित, भ्रष्टाचारी और नरक जैसी कलियुगी दुनिया से आज़ाद करवा देते हैं, ताकि इस परमात्म मिलन व सर्वम-गलकारी संगम युग में हम पुरुषार्थ कर उनके द्वारा स्थापित सुंदर स्वर्णिम सृष्टि में जाने के अधिकारी बन जायें, जिसके प्रतीकात्मक रूप में श्रीकृष्ण को नरकासुर का वध कर 16 हज़ार युवतियों को मुक्त कराते हुए दिखाया गया है।

दीपावली के दिन भक्त प्रहलाद को बचाने के लिए विष्णु जी द्वारा नरसिंह अवतार लेकर आना ये सिद्ध करता है परमात्मा अपने सच्चे भक्त अर्थात् अपने बच्चों को राक्षसी प्रवृत्तियों से दूर कर उन्हें बुराई की ओर जाकर अपने जीवन को बर्बाद करने से बचाते हैं व उन्हें अपनी शरण में लेते हैं, जिससे उनका जीवन श्रेष्ठ बन जाता है। आज परमात्मा शिव भी इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से हमें राक्षसी प्रवृत्तियों से दूर रहने की शिक्षा देते हैं व अपनी शरण में लेकर अर्थात् अपनी गोद में लेकर

- शेष पेज 8 पर

# कुमारियों का सच्चा श्रृंगार है सच्चाई, प्रेम, खुशी और सन्तुष्टता

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

मेरी दिल दिलाराम के साथ है, पता है मेरे दो बच्चे हैं - सुख और शान्ति। सुख है बेटा, शान्ति है बेटी, भले आप कुमारी हो आपकी सगाई भी हो गई, बच्चे भी आ गये क्योंकि अभी समय थोड़ा है, हरेक को पुरुषार्थ करके 5 बातें जो गीतों में बताते हैं वो लाइफ में हो। पहला गीत है सखी रे मैंने पायो तीन रत्न...इस गीत की एक एक लाइन आपके दिल को लग गई होगी। दूसरा गीत है जहां हमारा तन होगा वहां हमारा मन होगा...तन से यहां बैठे हो, मन कहां है? तो यह मन अगर यहां है तो 5 विकारों में से एक विकार की अंशमात्र भी न हो।

बाबा ने कहा है ऑनेस्ट रहो। कोई भी कमी हो तो बाबा को बताओ, बाबा मेरे में यह कमी है। ऐसे नहीं बाबा के सामने बैठे हो तो अच्छे हो और थोड़ा इधर-उधर जाते हो तो बाबा को भूल जाते हो। बाबा को भूलना माना बाबा की शिक्षाओं को भूलना। बाबा की जो शिक्षायें हैं वो हमारा श्रृंगार है, खास कुमारियों का श्रृंगार क्या है? कुमारियों को क्या श्रृंगार करना है? सच्चाई, प्रेम, सदा खुश, कभी भी न किससे नाराज़, न मेरे से कोई नाराज़। जो असली अच्छी-अच्छी पुरानी कुमारियां हैं, जिन्हों को डायरेक्ट बाबा ने पालना दी है, आज तक वो पालना सेवा कर रही है। हमें भी जो बाबा ने पालना दी है, आज से लेके जो बाबा से सुनते हो, औरों को सुनाने का प्लान बनाओ। ताकि और धर्म वालों को भी शान्तिधाम, निर्वाणधाम, परमधाम क्या है, कम से कम यह तो बता दो। भले सुखधाम में नहीं आवें पर शान्तिधाम हमारा घर है, निर्वाणधाम परमधाम हमारा घर है। तो हमारे जो दिल में होगा, धारणा होगी वही हमारे मुख पर आयेगा। मुख पर ऐसे ही नहीं आता है।

मैं जब पहले-पहले ज्ञान में आई, बाबा को भगवान समझती थी ना, यह भगवान है, परमात्मा का रथ है इतनी भावना थी, पर सखा रूप से इतनी भासना नहीं थी। तो सखा रूप में बाबा से कैसे मिलूँ, यह दीदी ने मुझे सिखाया, उस दिन से लेके मैं बाबा को कम्पैनियन के रूप में देखती हूँ। भगवान को अपना साथी बनाने से संग का रंग ऐसा लगता है हिम्मते बच्चे मददे बाप, पर सखा रूप में मदद ऐसी करता है जिसके कारण मुझे कभी यह नहीं लगता कि मैं अकेली हूँ, मैं अकेली होती तो खटिया पर सोई रहती। पर अकेली नहीं हूँ वो मेरा साथी है, यह रचता और रचना के ज्ञान से साक्षी होकर के, ड्रामा की नॉलेज से यह ड्रीम है या रीयल्टी है, बताओ।

मैंने कभी कर्मणा सेवा नहीं कहा है, मैं कहती हूँ यज्ञ सेवा। इन कर्मेन्द्रियों के द्वारा जो सेवा हुई तो एक कर्मेन्द्रियां शरीर में हैं, मन बाबा में है। इज़ी है ना। मन बाबा में, ज्ञान बुद्धि, धारण करने के लिए मन भी, चिंतन भी, मंथन भी किया तब मक्खन निकला ज्ञान का। यज्ञ में एक बहुत पुरानी माता थी प्रातः 4 बजे उठके मक्खन निकालके दे देती थी। तो बाबा कहता था आओ बच्चे, मैं मक्खन रोटी खिलाऊँ जो प्यार में बैठके हमको मक्खन रोटी खिलाता था। बाबा कहता था ऐसी पालना दो जो इन्हों को अपने लौकिक बाप का घर याद न आवे। पेशेन्ट को भी खिलाने के लिए कहता था, वंडर है बाबा का। जिस माता ने सारी लाइफ बाबा को मक्खन खिलाया, अंत में बाबा सामने खड़े हो दृष्टि दे रहे थे और उस माता ने शरीर छोड़ दिया।

बाबा कहते जब तक यहां पर हैं, मुरली सुन रहे हैं पर जब घर जाते हैं तो भूल जाते हैं। तो यह भूलने की भूल नहीं करनी है। बाबा भूल जाए तो हमारा क्या हाल होगा! इसलिए कभी नहीं भूलना है। जीना है तो बाबा की यादों में, कोई याद न आए। मरना है तो मुझे कोई याद भी न करे, ऐसा मरें। यह शब्द जो है मुझे स्मृति में रहने के लिए एक ज्ञान का अंदर ही अंदर सिमरण करना, सिमर-सिमर सुख पाओ तो कलह-कलेश सब मिट जायेगा।

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

# दिल से मेरा बाबा कहो, खुशी का भण्डारा खुल जायेगा

जब बाप और बच्चे का मिलन होता है तो कितनी खुशी दिल में अनुभव करते हैं क्योंकि मेरा बाबा है और मेरे को देख रहा है! तो सम्मुख देख करके बाबा को खुशी कितनी होती है, मेरा बाबा सिर्फ बाबा नहीं। मेरा बाबा, मेरे से मिलने के लिए आए हैं वाह! कमाल है मेरा बाबा मेरे लिये आया है, ऐसे अनुभव होता है ना? तो कोई भी मेरी चीज़ मिल जाए तो कितनी खुशी होती है। मेरा बाबा मेरे सामने आ गया। खुशी होती है ना और बाबा को भी कितनी खुशी होती है, मेरे बच्चे मेरे से मिलने आ गये और अभी तो बाबा को देख करके बाबा से मिलन मनाके दिल क्या कहती है, वाह बाबा वाह! सबकी आँखों में स्मृति में मेरापन कितना प्यारा लगता है।

सभी के दिल में कौन? मेरा बाबा, प्यारा बाबा जो कभी भूल नहीं सकता। भूल सकता है, कितनी भी कोशिश करो भूलना चाहो तो भी भूल नहीं सकता। मेरा कहते ही कितनी खुशी होती है, मेरा बाबा कहने से ही खुशी का भण्डारा खुल जाता है।

बाबा कहा, खुशी की खुराक मिल गई। तो मेरा कभी भूल ही नहीं सकता, रिवाजी छोटी-सी चीज़ भी मेरी है तो भूलना मुश्किल है। और सबसे प्यारे से प्यारी चीज़ कौन? मेरा बाबा कहा और स्वीच ऑन हुआ। सबके चेहरे ही बदल जाते हैं क्योंकि मेरे बाबा के पास जो सब प्राप्तियां हैं ना वो मेरी हैं। बाबा के पास किसके लिए हैं? हमारे लिए है। तो मेरा बाबा, मेरी मिलकियत, मेरे बाबा से मेरा खज़ाना मिल गया। यही अनुभव है ना। अभी मेरा बाबा दिल से निकल नहीं सकता। ऐसे नहीं कहते याद कैसे करें? भूलें, यह हो ही नहीं सकता। भूल कैसे सकते हैं यह क्वेश्चन उठ सकता है, याद कैसे करें वो नहीं। देखो मेरा पुराना कपड़ा भी नहीं भूलता। तो जितना मेरापन लायेंगे उतना याद सहज है।

**प्रश्न :** दादी, सदा खुश रहने के लिए क्या ध्यान रखें? कोई ऐसी बातें बतायें जो हमारी खुशी कभी भी गुम न हो।

**उत्तर:** खुशी किससे होती है, पहले यह अपने से क्वेश्चन करें कि खुशी क्यों होती है, कैसे होती है? कोई प्राप्ति है तो खुशी है। तो बाबा से जो हमको रोज़ इतना खज़ाना मिलता है, उसे याद करो तो खुशी स्थायी रहेगी। हमें तो कितना सहज बाबा मिल गया। लोग तो कहेंगे तपस्या करनी पड़ेगी, यह करना पड़ेगा, वह करना पड़ेगा, हम तो कहते हैं तपस्या तो दिल का मिलन होता है, जब भी याद करो मेरा बाबा मुश्किल लगता है? बाबा को सदा साथ रखो तो खुशी में रहेंगे।

**प्रश्नः** दादी, बाबा को अपना कैसे बनायें?

**उत्तर:** है ही बाबा अपना ना और है कौन! और है कोई? है ही मेरा बाबा ना और कोई है क्या? सिर्फ याद करें अपना हक, मेरा कहा और याद आयी। बाबा दिल में समा गया ना, जो दिल में बात समाई जाती है ना वो भूलती नहीं है। अभी देखो दुःख की बातें आती हैं तो भूलती हैं? चाहते भी हैं भूल जावें, भूलती हैं? तो हमको बाबा ने इतना सुख दिया है, खज़ाना सुख का दिया है और बाप का खज़ाना मेरा खज़ाना होता है। बाबा कहा माना खज़ाना याद है। तो सभी खुश हैं और सदा खुश रहने का भी प्रॉमिस है बाबा से। पक्का है ना।

**प्रश्नः** दादी, जैसे आपकी कंपनी सबको इतना खुश करती है, अभी आप बैठे हो तो सबका दिल करता है यहीं बैठे रहें, आपकी कंपनी में रहें, दादी यह हम लोगों का भी हो सकता है?

**उत्तरः** होता है ना, हो सकता है क्यों, होता है। अभी सेन्टर से आप आओ तो क्या लिखते हैं जब से आप गई हैं तो ऐसा हो रहा है, ऐसा हो रहा है, आता है ना। आप सदा बाबा की कम्पनी में रहो तो आपकी भी कम्पनी सबको अच्छी लगेगी।

बाकी सभी कुमार तो बहादुर है ना! पत नहीं गंवाना हमारी, ऐसे ही रहना। सदा विजयी। अमृतवेले क्या वरदान लेते हो? विजयी भव।

टीचर्स जो हैं वो मेहनत करके सेवा का रूप दिखाने के लिए आपके पास पहुंच गई हैं। देखो इन्हों के चेहरों पर खुशी कितनी है। युगल जो हैं भले घर में रहते हैं लेकिन लक्ष्य यही है कि हम बाबा के हैं, बाबा के ही रहेंगे। और कितनी खुशी होती है। एक दो से मिलते हैं तो भी बहुत खुशी होती है अरे, यह मेरा साथी है। तो सभी खुश। अच्छा है।